राष्ट्रीय संगोष्ठी
''जल संकटः कारण, चुनौतियाँ, समस्याएँ एवं समाधान''
आयोजक : समाजशास्त्र विभाग
गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट
दिनाँकः 21-22 फरवरी, 2018

संगोष्ठी आख्या, वक्ताओं के नाम, निष्कर्ष एवं व्यय विवरण

उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश शासन द्वारा वित्तपोषित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ***''जल संकटः कारण, चुनौतियाँ, समस्याएँ एवं समाधान''*** का आयोजन दिनाँक : 21–22 फरवरी, 2018 को समाजशास्त्र विभाग, गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट द्वारा किया गया। पंजीकरण एवं जलपान का कार्य प्रातः 08:30 बजे से प्रारम्भ हुआ। प्रातः 10:00 बजे प्राचार्य प्रो. प्रेम शंकर मिश्र की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि प्रो0 योगेश चन्द्र दुबे, कुलपति, जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट (उ0प्र0) के द्वारा संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र में वक्ता के रूप में डॉ0 बी0के0 पाण्डेय प्राचार्य, राजकीय महिला महाविद्यालय बाँदा, डॉ0 दुर्गेश शुक्ल प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर चित्रकूट, डॉ0 देवकुमार, एसो0प्रोफेसर, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा, डॉ0 विनोद शंकर सिंह, एसो0प्रोफेसर समाजकार्य, महात्मागांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट सतना म0प्र0, श्री अभिमन्यु भाई समाजसेवी, सर्वोदय सेवा संस्थान चित्रकूट ने अपने विचार रखे। इसके पूर्व संयोजक डॉ0 राजेश कुमार पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र ने की। संचालन का दायित्व डॉ0 वंशगोपाल एवं सहसंयोजक अमित कुमार सिंह ने संभाला।

उद्घाटन सत्र

दिनाँकः 21.02.2018 समयः 10:00 से 11:45 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र	प्राचार्य	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट
2.	प्रो0 योगेश चन्द्र दुबे	कुलपति	जे0आर0एच0यू0 चित्रकूट
3.	डॉ0 बी0के0 पाण्डेय	प्राचार्य	राजकीय महिला महाविद्यालय बाँदा
4.	डॉ0 दुर्गेश शुक्ल	प्राचार्य	राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर चित्रकूट
5	डॉ0 देवकुमार	एसो0प्रोफेसर	कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बाँदा
6.	डॉ0 विनोद शंकर सिंह	एसो0प्रोफेसर	म0गां0चि.ग्रा0विश्वविद्यालय चित्रकूट
7.	श्री अभिमन्यु सिंह	समाजसेवी	सर्वोदय सेवा संस्थान चित्रकूट
8.	डॉ0 राजेश कुमार पाल	संयोजक	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट

उद्घाटन सत्र के उपरांत 11:45 से 12:00 तक का समय स्वल्पाहार का रहा। इसके पश्चात् 12:00 बजे से 02:00 बजे तक प्रथम तकनीकी सत्र का शुभारंभ हुआ। प्रथम तकनीकी सत्र के वक्ताओं का विवरण निम्नवत् हैं

प्रथम तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 21.02.2018 समयः 12:00 से 02:00 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र	प्राचार्य	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट
2.	डॉ0 वर्मा	प्राचार्य	महामति प्राणनाथ महाविद्यालय मऊ चित्रकूट
3.	डॉ0 एस कुरील	एसो0प्रोफेसर राजनीति विज्ञान	महामति प्राणनाथ महाविद्यालय मऊ चित्रकूट
4.	डॉ0 दिव्या सिंह	एसो0प्रोफेसर समाजशास्त्र	पं0 जे0एल0एन0पी0जी0कालेज बाँदा

प्रथम तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात् 02:00 से 03:00 बजे तक भोजनावकाश का समय रहा। भोजन पश्चात् द्वितीय तकनीकी सत्र का समय 03:00 से 05:00 बजे तक निर्धारित किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र में जो वक्ता उपस्थित रहे उनका विवरण निम्नवत् है–

द्वितीय तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 21.02.2018 समयः 03:00 से 05:00 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र	प्राचार्य	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट
2.	डॉ0 राजेश त्रिपाठी	एसो0प्रोफेसर ग्रामीण प्रबन्धन	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
3.	डॉ0 देवेन्द्र पाण्डेय	एसो0 प्रोफेसर	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
4.	डॉ0 जे0पी0 सिंह	असि0प्रोफेसर इतिहास	राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर चित्रकूट
5.	श्री अमित कुमार सिंह	असि0प्रोफेसर समाजशास्त्र	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट

द्वितीय सत्र के समापन के पश्चात् सभी अतिथियों को सूक्ष्म जलपान कराया गया। इसके पश्चात् इच्छुक प्रतिभागियों ने चित्रकूट भ्रमण किया तथा शेष प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लिया।

दिनाँक 22.02.2018 को प्रातः 08:30 बजे से जलपान के पश्चात् 09:00 बजे से तृतीय तकनीकी सत्र का प्रारम्भ हुआ जो 11:00 बजे समाप्त हुआ। इसमें जो विद्वत्जन वक्ता के रूप में उपस्थित रहे उनका विवरण निम्नवत् है–

तृतीय तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 22.02.2018 समय 09:00 से 11:00 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र	प्राचार्य	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट उ0प्र0
2.	डॉ0 विजय यादव	असि0प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान	पं0 जे0एल0एन0पी0जी0कालेज बाँदा
3.	डॉ0 मनोज अस्थाना	असि0प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान	पं0 जे0एल0एन0पी0जी0कालेज बाँदा
4.	डॉ0 एस0एन0 त्रिपाठी	असि0प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान	पं0 जे0एल0एन0पी0जी0कालेज बाँदा
5	डॉ0 अपर्णा मिश्र	असि0प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान	पं0 जे0एल0एन0पी0जी0कालेज बाँदा

तृतीय तकनीकी सत्र के समापन के बाद सूक्ष्म जलपान के उपरांत चतुर्थ तकनीकी सत्र का प्रारम्भ 11:30 से अपराह्न 01:30 तक रखा गया। इस सत्र में जो वक्ता मंचासीन रहे उनका विवरण निम्नवत् है–

चतुर्थ तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 22.02.2018 समय 11:30 से 01:30 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम
1	प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र	प्राचार्य	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट उ0प्र0
2.	डॉ0 अजय चौरे	एसो0प्रोफेसर समाजकार्य	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
3.	डॉ0 नीलम चौरे	एसो0प्रोफेसर राजनीति विज्ञान	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
4.	श्री भागवत प्रसाद	समाजसेवी	अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान चित्रकूट
5	डॉ0 राजेश कुमार पाल	संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट उ0प्र0

चतुर्थ तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात् सभी अतिथियों, शोधकर्ताओं एवं अन्य उपस्थितजनों ने भोजन ग्रहण किया। भोजनोपरांत 02:30 से समापन सत्र का प्रारंभ हुआ जो 04:00 बजे सम्पन्न हुआ। समापन सत्र में जो विद्वत्जन मंचासीन रहे उनका विवरण निम्नव् है–

समापन सत्र

दिनाँकः 22.02.2018 समय 02:30 से 04:00 बजे तक

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय / विश्वविद्यालय / संस्थान का नाम
1	प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र	प्राचार्य	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट उ0प्र0
2.	श्री शिवाकान्त द्विवेदी	जिलाधिकारी	चित्रकूट
3.	श्री रंगनाथ मिश्र	प्रबन्धक	गयाप्रसाद महाविद्यालय सीतापुर चित्रकूट
4.	श्री अभिमन्यु सिंह	समाजसेवी	सर्वोदय सेवा संस्थान चित्रकूट
5	डॉ0 राजेश कुमार पाल	संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट उ0प्र0

समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री शिवाकान्त द्विवेदी जिलाधिकारी चित्रकूट उपस्थित रहे। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो0 प्रेम शंकर मिश्र ने की। समापन सत्र में वक्ता के रूप में श्री रंगनाथ मिश्र एवं श्री अभिमन्यु भाई ने अपने विचार रखे। समापन सत्र के अंत में संगोष्ठी संयोजक डॉ0 राजेश कुमार पाल ने सम्पूर्ण सेमिनार की रिपोर्ट प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन सहसंयोजक अमित कुमार सिंह एवं संचालन का कार्य डॉ0 वंशगोपाल द्वारा किया गया।

संगोष्ठी के निष्कर्ष

''जल संकटः कारण, चुनौतियाँ, समस्याएँ एवं समाधान'' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के जो बिन्दु निर्धारित किये गये थे उन सबसे संबंधित व्याख्यान एवं शोध–पत्र पढ़े गये। इन व्याख्यानों एवं शोधपत्रों के प्रस्तुतीकरण के फलस्वरूप जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे निम्नवत् हैं–

- परम्परागत जल स्रोतों का विलुप्तीकरण एवं पर्यावरणीय असन्तुलन जल संकट के प्रमुख कारण हैं।
- यदि जल और उसके संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले समय में जल के अभाव के कारण समस्त जीवधारियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा।
- जनसंख्या वृद्धि और उसका भौतिक विस्तार भी जल संकट के लिए उत्तरदायी हैं। जलसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित एवं भौतिक आंधी को अभौतिक जगत की ओर मोड़ने की आवश्यकता है।
- जल संकट की वजह से कृषि क्षेत्र कमजोर पड़ता जा रहा है। अधिकांश कृषि क्षेत्र वर्षा जल पर ही आधारित है। निरन्तर कम होती वर्षा के कारण कृषक कृषि से बहुत तेजी से मुह मोड़ रहे हैं।
- वर्षा के अभाव की वजह से भूजल स्तर में भी भारी गिरावट आयी है। ऐसे में कृषि, उद्योग एवं घरेलू कार्यों हेतु भूजल का बढ़ता दोहन भविष्य में गम्भीर संकट पैदा कर सकता है।
- जल प्रदूषण, जल संकट का एक अन्य कारण है। नदी, नाले, तालाब, कुएं इत्यादि सभी प्रदूषण से युक्त हैं। ऐसे में स्वच्छ जल की उपलब्धता भी एक बहुत बड़ा प्रश्न है।
- जल संकट की वजह से पारिस्थितिकीय तन्त्र का संतुलन भी बिगड़ता जा रहा है। जन्तु जगत, वनस्पति जगत एवं मानव जगत की तारतम्यता खत्म होती जा रही है।

- पौराणिक एवं धार्मिक ग्रन्थों में जल की महत्ता का वर्णन है। इतना ही नहीं हमारे पूर्वजों ने लोक संस्कृति लोकगानों में भी इसके महत्व को समाहित किया है। फिर भी हम मनुष्यों ने इसको नजर अन्दाज ही किया।
- जल संकट के कारण जैवविविधता के अस्तित्व पर भी संकट मंडराने लगा है। तमाम जीव–जन्तुओं एवं पेड़–पौधों की प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं।
- जल सभी के लिए अनिवार्य है। इसलिए स्वयं अपने को एवं जीवों को जीवित रखने हेतु जल संकट के विषय में व्यक्तिगत एवं सामुदायिक जागरूकता अति आवश्यक है।
- बुन्देलखण्ड में जलसंकट की वजह से पलायन तक की नौबत आ गयी है। चित्रकूट जनपद के पाठा क्षेत्र में जल की समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है।
- कंक्रीट का फैलता जाल जल संकट को और बढ़ाता जा रहा है। दिन–प्रतिदिन कच्ची भूमि कंक्रीट के आवरण में ढ़कती जा रही है जिससे वर्षा जल भूमि में रिस कर नहीं जा पाता और भूजल स्तर में वृद्धि नहीं हो पाती।
- जल संकट के कारण वातावरण में नमी की बहुत कमी हो गयी है। भौतिक लिप्सा एवं जनसंख्या वृद्धि के कारण वृक्षों का अंधाधुंध कटान होने की वजह से तापमान में बेतहासा वृद्धि अनेक विकराल समस्याओं को जन्म दे रही है।
- सरकारी नीतियां भी जल संकट की समस्या से निदान दिलाने में असमक्ष हैं क्योंकि जल संकट की समस्या प्रकृति से जुड़ी हुई है।
- नदी जोड़ परियोजनाओं की सार्थकता भी बहुत प्रासंगिक नहीं है क्योंकि सबसे महत्वपूर्ण यह है कि प्रत्येक नदी में जल पर्याप्त हो। जब जल ही पर्याप्त नहीं होगा तो इस तरह की परियोजनाओं का कोई महत्व नहीं है।
- जल स्रोत के परम्परागत साधनों को हमने पिछड़ेपन का सूचक मानकर उन्हें कोई महत्व नहीं दिया। परिणामस्वरूप ये साधन अस्तित्वहीन हो गये। जब जल संकट पैदा हुआ तब हमें परम्परागत साधनों की याद आई। परन्तु अब बहुत देर हो चुकी है और भावी पीढ़ी उसका खामियाजा भुगत रही है।

(डॉ0 राजेश कुमार पाल)
संयोजक
राष्ट्रीय संगोष्ठी